अब तक की लिखी जाने वाली श्रेष्ठतम शृंखला (1:1, 2)

पिछली गर्मियों में जब मैं रोमानिया में था, तो मेरी बेटी सिन्डी ने मुझे बच्चों के लिए मैडलिन एल. इंगले की एक अंग्रेज़ी पुस्तक *ए रिंकल इन टाइम के* बारे में बताया। सिन्डी और मेरे पोते, सेथ को, यह पुस्तक बहुत अच्छी लगी। उन्होंने मुझ से कहा कि मैं इसी लेखक की और पुस्तकें ढूंढूं – विशेषकर *ए रिंकल इन टाइम* की शृंज़ला की। मैं समझता हूं, यदि इस पुस्तक से मुझे आनन्द मिले, तो मैं इस अफसोस के साथ इसे रखूंगा कि इसके पात्रों का क्या हुआ। मैं उनके बारे में और अधिक जानना चाहूंगा। यदि मुझे पता चले कि इस शृंखला में कुछ और सामग्री है तो मैं वह भी लेना चाहूंगा। अगर वह मुझे मिल जाए तो मैं झट से उसे ले लूंगा।[1]

सुसमाचार की कहानी भी एक शृंखला है। यह अब तक की लिखी जाने वाली शृंखलाओं में सर्वोत्तम, शृंखलाओं की शृंखला मसीह की कहानी की शृंखला है। हम इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक कहते हैं। विलियम बार्कले के अनुसार, ''एक प्रकार से प्रेरितों के काम की पुस्तक, नये नियम में सबसे महत्वपूर्ण है।'' शिक्षक मौन्टि कॉक्स ने ध्यान दिलाया कि प्रेरितों के काम की पुस्तक, ''सुसमाचारों और पत्रियों के मध्य एक पुल है'' और, ''नये नियम की निर्णायक (प्रधान) पुस्तक है।'' प्रेरितों के काम पर अपनी कमैन्ट्री में एन्थोनी ली ऐश ने टिप्पणी की कि ''प्रेरितों के काम की पुस्तक के बिना हमें इसका (अर्थात आरज़्भिक कलीसिया की कहानी का) कुछ भी पता नहीं चल सकता।''

हमारे पास सुसमाचार के चार वृत्तांत हैं। उनमें से हम किसी एक को भी खोना नहीं चाहते, परन्तु अगर उनमें से एक हमें न भी मिलता, तो भी हम यीशु के बारे में काफ़ी कुछ जान सकते थे। हमारे पास इक्कीस पत्रियां हैं। हम उनमें से किसी एक को भी खोना नहीं चाहते, परन्तु यदि उनमें से एक खो भी देते, तो भी मसीह की मूल शिक्षा और उसके मार्ग के बारे में हमें पता चल सकता था। परन्तु नये नियम में, इतिहास की केवल एक ही पुस्तक है, प्रेरितों के काम की पुस्तक। इसके बिना आरज़्भिक कलीसिया के कामों के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं चलता सिवाय उन कुछेक तथ्यों के जो पौलुस ने अपनी पत्रियों में दिए। प्रेरितों की पुस्तक के बिना, हमें कितनी हानि होती!

हम इस महान पुस्तक का अध्ययन करने जा रहे हैं। यह अध्ययन लज़्बा होने के कारण

कुछ चुनौती भरा होगा। नये नियम की यह तीसरी सबसे लम्बी पुस्तक है। लूका सबसे लम्बी, और मत्ती दूसरी सबसे लम्बी पुस्तक है। प्रेरितों के काम की पुस्तक लगभग मत्ती के समान ही है। संयोग से, इसका अर्थ यह हुआ कि लूका ने नये नियम में किसी भी अन्य लेखक से अधिक लिखा है। उसने अधिक पुस्तकें नहीं (पौलुस ने तेरह या चौदह; यूहन्ना ने पांच) लिखीं, परन्तु लूका और प्रेरितों के काम मिलकर नये नियम का लगभग 30 प्रतिशत भाग हो जाती हैं।

मैं अपने इस अध्ययन को ''रोमांचकारी मसीहियत'' का नाम दे रहा हूं। आशा करता हूं कि हमारे इस अध्ययन में आरम्भिक दिनों की कलीसिया का रोमांच झलकेगा। विशेषकर मैं यह आशा करता हूं कि यह रोमांच हमारे मनों और जीवनों में प्रवेश करेगा।

शीर्षक

प्रेरितों के काम की पुस्तक के परिचय का आरम्भ करने का अच्छा ढंग अपनी बाइबल में से इसके शीर्षक को देखना है। हिन्दी की (OV)बाइबल में इसे ''प्रेरितों के कामों का वर्णन'' और ''प्रेरितों के काम'' कहा गया है। यही शीर्षक सबसे अधिक प्रचलित है।

ये शीर्षक आत्मा की प्रेरणा से नहीं हैं। पहली शताब्दी की कलीसिया इनमें से किसी भी शीर्षक का प्रयोग नहीं करती थी। प्रेरितों के काम मूल रूप से ''मसीही आरम्भ का इतिहास'' अर्थात ''आरम्भ'' नामक दो अंकों के सेट का एक भाग था। ये रचनाएं इसी रूप में कलीसियाओं में वितरित की गईं। पहली शताब्दी के अन्त या दूसरी शताब्दी के आरम्भ में, पहले अंक को अलग करके सुसमाचार के मत्ती, मरकुस और यूहन्ना के वृत्तांत के साथ मिलाकर इसे ''लूका रचित सुसमाचार'' के नाम से जाना जाने लगा। उस समय का दूसरा अंक आज हमारे लिए प्रेरितों के काम की पुस्तक बन गया। तब भी, इसे अलग-अलग पदनामों से जाना जाता था; जैसा कि हमने ऊपर, ''प्रेरितों के काम'' को देखा।

शीर्षक ''प्रेरितों के काम'' से मुझे अधिक परेशानी नहीं है, परन्तु हो सकता है कि इससे यह लगे कि इसमें *सभी* प्रेरितों के *सभी* काम लिखे गए हैं। जबकि, अध्याय 1 के सिवाय जिसमें *सभी प्रेरितों के कुछ ही कामों* का वर्णन है, पुस्तक में जिन प्रेरितों[2] के नामों का वर्णन है, वे केवल पतरस, पौलुस, याकूब और यूहन्ना ही हैं। इनमें से याकूब और यूहन्ना[3] के बारे में तो बहुत ही कम बताया गया है। हम कह सकते हैं कि यह पुस्तक कुछ प्रेरितों के *कुछ* ही कामों के बारे में बताती है। विशेषकर, पुस्तक का पहला भाग पतरस के कुछ कामों के बारे में बताता है, और पुस्तक का अन्तिम भाग पौलुस के कुछ कामों के बारे में बताता है।

''प्रेरितों के काम'' शब्द अत्यधिक उदार भी है और अत्यधिक संकीर्ण भी। यह अत्यधिक उदार इसलिए है क्योंकि पुस्तक सभी प्रेरितों के कामों के बारे में नहीं बताती और अत्यधिक संकीर्ण इसलिए है क्योंकि, पतरस और पौलुस के अतिरिक्त इसके मुख्य पात्र प्रेरित हैं भी नहीं। बल्कि वे, ''साधारण'' मसीही हैं जो सुसमाचार को फैलाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करते हैं: उन मसीहियों में से स्तिफनुस, फिलिप्पुस, बरनबास, सीलास,

तीमुथियुस, अपुल्लोस, अक्विला और प्रिस्किल्ला के नाम प्रमुज़ हैं।

अध्ययन के लिए मैं ''प्रेरितों'' और ''प्रेरितों के काम'' का ही उपयोग करूंगा। ये शीर्षक कुछ रंगहीन तो लगते हैं, परन्तु इनसे हम उस समस्या को टाल सकते हैं, जो किसी और पदनाम से उत्पन्न हो सकती है।

पुस्तक

जब हम पुस्तक का अध्ययन करने की तैयारी में हैं, तो ऐसे प्रश्नों पर विचार करना लाभदायक होगा कि ''यह पुस्तक किसने लिखी ?''; ''किसको लिखी ?''; ''कब लिखी ?''; और ''क्यों लिखी ?'' इन प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए हम अपने पाठ का अध्ययन करते हैं। हम पहले अध्याय की 1 और 2 आयतों से आरज़्भ करते हैं: ''हे थियुफिलुस, मैंने पहली पुस्तक उन सब बातों के विषय में लिखी, जो यीशु ने आरज़्भ में किया और करता और सिखाता रहा। उस दिन तक जब तक वह उन प्रेरितों को, जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया।''

यह देखने के लिए कि हम उसमें और गहराई से क्या पा सकते हैं हम पहले अध्याय के शेष भाग को भी देखेंगे। इसके अतिरिक्त, हम अपनी जानकारी के स्रोत के रूप में लूका 1:1 – 4 का प्रयोग भी करेंगे:

> इसलिए कि बहुतों ने उन बातों का, जो हमारे बीच में बीती हैं – इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक थे, हम तक पहुंचाया। इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सज़्पूर्ण हाल आरज़्भ से ठीक – ठीक जांच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं। कि तू यह जान ले, कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं।

ध्यान में रखें कि मूल में लूका और प्रेरितों की पुस्तक एक अंक के रूप में प्रसारित की गई थी, इसलिए लूका 1:1–4 *दोनों* पुस्तकों के परिचय का काम करती है।

लिखने वाला

''... पहली पुस्तिका ... लिखी'' (प्रेरितों 1:1) लूका की पुस्तक की ओर इशारा करता है। प्रेरितों के काम और लूका दोनों पुस्तकों में एक ही बल दिया गया है; जहां लूका की पुस्तक समाप्त होती है वहीं से प्रेरितों के काम की पुस्तक आरज़्भ होती है। दोनों का प्राप्तकर्ता एक ही है, थियुफिलुस (लूका 1:3; प्रेरितों 1:1)। दोनों की एक ही शैली है: कम से कम पचास ऐसे शब्द, जिनका वर्णन नए नियम में बिल्कुल भी नहीं है, इन दोनों पुस्तकों में आम मिलते हैं दोनों के पाठकगण अन्यजातियों अर्थात गैर यहूदियों से ही हैं (यहूदी शब्दावली और रीतियों को विस्तार से बताया गया है[4])। इसलिए, निश्चित ही जिसने एक पुस्तक लिखी, दूसरी भी उसी ने ही लिखी होगी।

निस्संदेह, प्रेरितों 1:1 का ''मैंने'' का इशारा ''प्रिय वैद्य लूका'' की ओर ही है (कुलुस्सियों 4:14)। इस बात पर, बाहरी और आंतरिक प्रमाण एकमत हैं। दोनों पुस्तकें पहली नज़र में ही यह आभास देती हैं कि, उनका लिखने वाला कोई और नहीं बल्कि लूका ही है। इस तथ्य के गवाहों में इरेनियुस (लगज़ग सन 180 ईस्वी) लूका की पुस्तक की तथाकथित मार्सियनवाद - विरोधी प्रस्तावना (लगभग सन 160-180), मुरातोरी सिद्धांत (लगभग सन 170-190), सिकन्दरिया का कलैमेन्ट (150-217), और टर्टूलियन (150-220) शामिल हैं। जब इतिहासकार यूसिबुस ने 325 में लिखा, तो किसी ने यह आपत्ति नहीं की कि ये दोनों अंक लूका के ही लिखे हुए हैं।

आंतरिक प्रमाण प्रेरितों के काम में (16:10-17; 20:5-15; 21:1-18; 27:2-28:16) ''हम'' पर ही केन्द्रित हैं। इन विवरणों का अन्य पुरुष से उत्तम पुरुष की ओर जाना, इस बात का संकेत देता है कि लेखक भी पौलुस के साथ यात्रा कर रहा था। निष्कासन की प्रक्रिया के द्वारा हम लूका तक जल्द ही पहुंच सकते हैं।[5] आन्तरिक प्रमाणों और विशेषताओं की ओर ध्यान दिया जा सकता है जैसे कि चिकित्सकीय शब्द का उपयोग विशेषकर लूका की पुस्तक[6] में ही है। इन शब्दों के होने से इसमें संक्षिप्त प्रमाण तो नहीं मिलता, परन्तु इससे समझ में आ जाता है कि लेखक अवश्य ही एक चिकित्सक है।

लूका के बारे में हम बहुत अधिक नहीं जानते (उसने अपने बारे में बताने के लिए नहीं लिखा) परन्तु, उसके बारे में हम कई बातें जान सकते हैं, कि लूका अन्यजातियों में से था, सज़्भवत: वह यूनानी था।[7] परज़्परा के अनुसार वह सीरिया के अन्ताकिया का रहने वाला था।[8] वह मसीह के साथ तो नहीं रहा (लूका 1:2), परन्तु वह पौलुस के साथ काम करने वाला और उसका सहयात्री था (फिलेमोन 24)। कुलुस्सियों 4:14 में उसके लिए ''प्रिय'' शब्द का प्रयोग बताता है कि उसे कितना पसन्द किया जाता था।

लूका के विषय में विशेष तथ्य यह है कि वह एक चिकित्सक था (कुलुस्सियों 4:14)। पौलुस के सामान्य चिकित्सकीय कष्टों (2 कुरिन्थियों 12:7-10) और उसके शरीर के कष्टों (2 कुरिन्थियों 11:23-27) को देखकर हम जान सकते हैं कि पौलुस के लिए अपनी यात्रा में ऐसे साथी का होना कितना लाभकारी रहा होगा!

लूका एक डॉक्टर से कहीं बढ़कर था। वह एक बहादुर व्यक्ति था, जिसने उन तमाम मुश्किलों का भी सामना किया जो पौलुस पर आईं। वह कलीसिया बनाता था और स्पष्ट है कि जब पौलुस को छोड़ बाकी सब फिलिप्पी से चले गए तो वह वहीं ठहरा रहा और पौलुस का विश्वसनीय मित्र भी था। जब पौलुस को दूसरे लोग छोड़ गए तब वही पौलुस के साथ था (फिलेमोन 24; 2 तीमुथियुस 4:11)।

लूका के बारे में *अति* महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उसे पवित्र आत्मा की *प्रेरणा* थी। जब हम लूका रचित सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि यह ''प्रिय वैद्य'' एक शिक्षित व्यक्ति था और वह परख करने की समझ रखता था। परन्तु, हमें यह कदापि नहीं सोचना चाहिए कि ये दोनों पुस्तकें उसकी समझदारी का परिणाम हैं। लूका भी ''पवित्र आत्मा के द्वारा'' उसी प्रकार उभारा गया जैसे 2 पतरस 1:21 में अन्यों के

बारे में कहा गया है। सम्भव है कि लूका को यह प्रेरणा पौलुस द्वारा उस पर हाथ रखने से ही मिली हो। मसीही लोगों को आश्चर्यकर्म करने के योग्य बनाने के लिए पौलुस कइयों पर हाथ रखता था (तुलना प्रेरितों 19:6)। पौलुस ने अपने साथ यात्रा करने वाले साथियों पर हाथ रखे (2 तीमुथियुस 1:6); हम यह सोच भी नहीं सकते कि उसने लूका पर हाथ न रखे हों। चमत्कारी दानों में से एक ''भविष्यवाणी'' का अर्थात आत्मा की प्रेरणा से शिक्षा देने का दान भी था (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:10)।[9] और स्पष्टतया लूका को यह दान मिला था।

संरक्षक

लूका और प्रेरितों के काम (की पुस्तक) दोनों ही ''थियुफिलुस''[10] के नाम हैं। ''थियुफिलुस'' मिश्रित यूनानी शब्द *थियोस* (''परमेश्वर'') और *फिलोस* ''मित्रता का प्रेम'' (मैत्री प्रेम का क्रिया रूप) या फिलिया (मैत्री प्रेम का संज्ञा रूप) है। इस नाम का अर्थ ''परमेश्वर से प्रेम करने वाला'' अथवा ''जिससे परमेश्वर प्रेम करता है''[11] दोनों में से कुछ भी हो सकता है। इसलिए इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कौन से शब्द का प्रयोग किया जाए।

थियुफिलुस की पहचान के बारे में कई अनुमान लगाए गए हैं। कइयों का तो यह भी कहना है कि यह किसी व्यक्ति का वास्तविक नाम नहीं है, परन्तु कुछ लोग मानते हैं कि वह उन सभी का प्रतिनिधि है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, या जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है। कुछ लोग कहते हैं कि थियुफिलुस शाही महल में रहने वाले प्रसिद्ध रोमी व्यक्तित्व का उपनाम था जो नीरो के सामने पौलुस का वकील था। एक और सुझाव दिया जाता है कि थियुफिलुस पहले लूका का मालिक था। (इस दृश्य में, लूका ने अपना जीवन एक दास के रूप में आरम्भ किया। जब लूका ने अपने मालिक का जानलेवा बीमारी से इलाज किया, तो थियुफिलुस ने लूका को स्वतन्त्र कर दिया। इस कारण लूका ने उसके प्रति कृतज्ञता दिखाने के लिए ये पुस्तकें उसी को समर्पित कर दीं)।

इसकी व्याख्या के लिए सबसे सरल (और सम्भवत: उत्तम) ढंग यह है कि लूका ने ये पुस्तकें थियुफिलुस नाम के एक वास्तविक व्यक्ति के नाम लिखीं जो एक रोमी अधिकारी था। उन दिनों ''थियुफिलुस'' नाम आम प्रचलित था। किसी को आदर देने के लिए ''महाप्रतापी'' या श्रीमान शब्द का प्रयोग किया जा सकता था। परन्तु ऐसा अधिकतर किसी रोमी अधिकारी को सम्बोधित करने के लिए ही किया जाता था (प्रेरितों 23:26; 24:3; 26:25)। लूका 1:1-4 में संकेत देता है कि थियुफिलुस एक मसीही व्यक्ति (सम्भवत: नया बना) था और लूका ने निश्चय किया कि वह मसीह के जीवन और कलीसिया के आरम्भिक दिनों के बारे में उसे बताए, ताकि थियुफिलुस जान ले कि ''वे बातें जिनकी ... [उसने] शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं।''

अभी भी हम उलझन में हैं कि लूका ने इन पुस्तकों में इस प्रकार संबोधन *क्यों* किया।[12] हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं। हो सकता है कि थियुफिलुस ने लूका से कुछ जटिल प्रश्न पूछे हों और लूका ने इसे अवसर जानकर अपने ढंग से उसे सिखाना चाहा हो। शायद

थियुफिलुस, लूका का समर्थक और संरक्षक था, जो उसके लेखों को तैयार करने, उनकी प्रतिलिपियां बनाने और उनको आगे बांटने का खर्च उठाता था। (क्योंकि पुस्तकों की प्रतिलिपियां बनाने के लिए उनको हाथ से ही लिखना पड़ता था, और इसमें काफी समय लगता था तथा यह एक महंगी प्रक्रिया थी)। शायद लूका मसीहियत के विरुद्ध उस झूठी निन्दा को रोकना चाहता था जो रोमी समाज के द्वारा फैलाई जा रही थी। लूका को आशा थी कि इससे थियुफिलुस की, और उसके द्वारा रोमी साम्राज्य में विशेष वर्ग के लोगों की सहायता होगी। हो सकता है कि लूका ने कई कारणों से इन पुस्तकों में सञ्जोधित किया हो जो हमने दिये हैं और/या कोई और ऐसा कारण भी हो सकता है जिसकी हमने खोज नहीं की।

पुस्तक के प्राप्तकर्ता के इस विषय को बन्द करने से पहले इस बात पर बल देना आवश्यक है कि थियुफिलुस के नाम के उल्लेख का अर्थ यह कदापि नहीं है कि पुस्तक केवल उसी के लिए थी। कुछ पत्रियां कई निजी व्यक्तियों के नाम लिखी गईं और वे सञ्भाल कर रखी गई हैं क्योंकि उन सब में हम सभी के लिए शिक्षाएं हैं। यदि आप परमेश्वर से प्रेम करते हैं और परमेश्वर आपसे प्रेम करता है तो प्रेरितों के काम की पुस्तक विशेष रूप से आप ही के लिए है!

उद्देश्य

जब हम थियुफिलुस की बात कर रहे थे, तो हमने ''क्यों?'' के प्रश्न की बात की थी। आइए उसी प्रश्न को नया रूप दें: इस पुस्तक को लिखने के लिए लूका का क्या *उद्देश्य* था?

बहुत से विद्वानों का मत है कि दूसरी पुस्तकों की तरह इस पुस्तक में इसका उद्देश्य स्पष्ट करने वाला कोई वाक्य नहीं है।[13] क्योंकि लूका 1:1–4 में केवल लूका का ही नहीं बल्कि प्रेरितों का भी परिचय मिल जाता है, इसलिए यह बात सही नहीं है। लूका 1 के पहले भाग और प्रेरितों के पहले अध्याय पर ध्यान लगाकर हम जान सकते हैं कि लूका के क्या *उद्देश्य* थे:

लूका का उद्देश्य ऐतिहासिक था। लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक केवल इतिहास का वर्णन ही नहीं है, वरन इनमें ऐतिहासिकता पर अत्याधिक बल दिया गया है, क्योंकि ये मसीह के जीवन और प्रारञ्भिक कलीसिया के इतिहास के बारे में बताती हैं।

एक इतिहासकार के रूप में लूका के बारे में बहुत सी बातें ध्यान देने योग्य हैं: वह एक *सचेत* इतिहासकार था। लूका ने ''उन सब बातों का सञ्पूर्ण हाल आरञ्भ से ही ठीक-ठीक जांच कर उन्हें ... क्रमानुसार'' लिखा (लूका 1:3)। उसने एक के बाद एक का वर्णन किया: एक सौ व्यक्तिगत नाम, एक सौ स्थानों के नाम, रोमी राजनीति और कानून, स्थान, रीति और रिवाज़। वह एक अनुभवी इतिहासकार था। कालान्तर में, प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिए गए वर्णनों और उनकी यथार्थता पर संदेह किया जाता था, परन्तु समय के साथ-साथ पुरातत्व विज्ञान ने लूका को सही सिद्ध कर दिया है।[14]

लूका एक ऐसा इतिहासकार था जिसे आत्मा की *प्रेरणा* थी। उसने कई स्रोतों से जानकारी इकट्ठी की: प्रेरितों के काम की पुस्तक के पहले भाग के लिए, जब वह पौलुस के

साथ यरूशलेम गया (प्रेरितों 21:17), तो उसे बहुत से उन लोगों के साथ बात करने का अवसर मिल गया होगा, जो आरज़्भिक घटनाओं में शामिल थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक के पिछले भाग में उसने अपने अनुभव में से और कुछ पौलुस के साथ घटी घटनाओं का वर्णन किया।[15] परन्तु कुछ ऐसी घटनाएं जिनको उसने दर्ज किया (जैसे राजा अग्रिप्पा और फेसतुस से उसकी व्यक्तिगत बातचीत; प्रेरितों 25:13-22; 26:30-33), उन्हें लूका ईश्वरीय प्रकाशन के बिना नहीं जान सकता था। जैसे पहले कहा गया है कि इसमें कोई संदेह नहीं कि उसे चमत्कारी शक्ति देने के लिए पौलुस ने ही उस पर हाथ रखे। *लूका की ''सूचना का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत'' परमेश्वर का पवित्र आत्मा था!*[16] बेशक हमें लूका की खोज के महत्व को कम करके नहीं आंकना चाहिए, परन्तु यह लूका की अपनी कोशिश नहीं बल्कि आत्मा की अगुआई के कारण था जिसने लूका की पुस्तकों की सत्यता को प्रमाणित किया।

लूका के इतिहासकार होने की एक और विशेषता पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि वह एक *चयनात्मक* इतिहासकार है। सभी इतिहासकारों के लिए, चयनात्मक होना आवश्यक है। प्रेरितों 1:8 में लूका की वर्णनशैली का खुलासा मिलता है: यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, ''तुम ... यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे।'' लूका ने वह सब कुछ दर्ज नहीं किया जो कलीसिया के आरज़्भिक दिनों में हुआ। बल्कि, उसने अपना ध्यान उन घटनाओं को बताने में ही लगाया जिनसे पता चले कि सुसमाचार कैसे रोमी साम्राज्य के गुमनाम कोने से निकलकर केवल तीस वर्षों में उस पूरे साम्राज्य में फैल गया! (यह पुस्तक से जुड़े हुए प्रश्नों की गुत्थी सुलझाने में सहायता करता है: कि इस पुस्तक के अंत के बारे में क्या निष्कर्ष निकालें? यदि लूका का उद्देश्य यह बताना था कि रोम में सुसमाचार कैसे पहुंचा, तो पुस्तक सज़्पूर्ण है, क्योंकि सुसमाचार के रोम तक पहुंचने के बाद ही यह समाप्त होती है)।

लूका का उद्देश्य मसीही-धर्मशास्त्रीय था। प्रेरितों 1:1 में उसने पहले अंक की बात की। ''मैंने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु ने *आर भ* में किया और करता और सिखाता रहा।'' ''आरज़्भ'' शायद सहायक क्रिया हो सकता है,[17] परन्तु बहुत से टीकाकार मानते हैं (मैं उनसे सहमत हूं) कि इस दूसरे अंक से आशय ''उन सब के विषय में है जो यीशु ... करता और सिखाता रहा।''

प्रेरितों के काम की पुस्तक में बहुत से उपदेशों पर नज़र डालने से यह बात माननी पड़ेगी कि इस पुस्तक में अधिक (सज़्भवत: सबसे अधिक) बल यीशु को महिमा देने पर दिया गया है। भले ही लूका के लिए यीशु किसी उपदेश का विषय नहीं था; उसके लिए तो उसकी जीवंत उपस्थिति थी,[18] यीशु ने अपने शिष्यों से वायदा किया था कि उसके सुसमाचार को संसार में ले जाने के लिए वह भी उनके साथ रहेगा (मत्ती 28:18-20)। लूका यही चाहता था कि उसके पाठक जान जाएं कि यीशु पवित्र आत्मा को भेजकर और अपने लोगों के द्वारा काम *करता रहा*।

जैसे पहले ध्यान दिलाया गया था। प्रेरितों के काम की पुस्तक वास्तव में ''प्रेरितों के काम'' नहीं है। यह ''पतरस और पौलुस के काम''[19] की पुस्तक भी नहीं है। निश्चय ही

यह पवित्र आत्मा के काम की पुस्तक भी नहीं है। बल्कि यह तो ''*यीशु* के काम'' - की पुस्तक है क्योंकि उसका आत्मा लोगों के जीवनों में काम करता है।

सुसमाचार के वृत्तांतों में ''आरम्भ'' करके प्रेरितों में जो कुछ यीशु ''करता ...रहा'' उसकी सूची बनाना सचमुच ही दिलचस्प होगा। आप अगर आरम्भ करना चाहते हैं तो आपके लिए यह सूची है: यीशु ने पवित्र आत्मा भेजने का वायदा किया (यूहन्ना 16:7, 12, 13); कलीसिया को बनाने का उसका वायदा (तुलना मत्ती 16:18); पतरस से कलीसिया के द्वार खुलवाने का वायदा (मत्ती 16:18, 19); शिष्यों को उसकी आज्ञा (मत्ती 16:18-20; मरकुस 16:15, 16); चेलों को आश्चर्यकर्म करने की योग्यता देने का वायदा (मरकुस 16:17, 18);[20] आने वाले विरोध के बारे में उसकी बातें (यूहन्ना 15:18-25); और अन्त में विजय देने का उसका वायदा (यूहन्ना 14:1-3): प्रेरितों के काम की पुस्तक ''कहानी का शेष भाग'' है; इसमें अधूरा रहा काम पूरा होता है।

(यह समझ आने पर कि प्रेरितों के काम की पुस्तक यीशु पर ही केन्द्रित है, हमें इस उलझन से छुटकारा मिल जाता है कि लूका ने इसे इस तरह से समाप्त किया। लूका का उद्देश्य पौलुस के जीवन चरित्र को दिखाना होता तो हमें पुस्तक के अन्त में कुछ भी हल नहीं मिलता। यदि लूका का उद्देश्य हमें *यीशु* के बारे में बताना होता, तो फिर उस बात का महत्व कम हो जाता कि दो वर्ष के बाद पौलुस के साथ क्या हुआ।)

लूका का उद्देश्य एक मिशन को पूरा करना था।[21] प्रेरितों 1:2 में लिखा है कि यीशु ''उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया गया''। ''आज्ञा'' शब्द यीशु की किसी भी आज्ञा के लिए प्रयुक्त हो सकता है। परन्तु इस संदर्भ में, प्रेरितों के लिए ''आगे कदम बढ़ाने की आज्ञा'' है जिसे ग्रेट कमीशन अर्थात महान आज्ञा भी कहा जा सकता है। लूका द्वारा ग्रेट कमीशन का वृत्तांत, यीशु के ऊपर उठाए जाने के वर्णन से थोड़ा पहले (लूका 24:44-49) लूका 24 में मिलता है। यह बात प्रेरितों 1:8 से मेल खाती है, जब यीशु ने अपने प्रेरितों को आदेश दिया कि वे ''यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह'' होंगे। प्रेरितों के काम की पुस्तक की कहानी का मुख्य विषय कलीसिया के मिशन का पूरा होना है।

लूका का उद्देश्य बचाव था। इसके लिए अंग्रेज़ी का शब्द अपोलोजेटिक (रक्षात्मक) यूनानी के शब्द अपोलोजिया से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''बचाव।'' लूका के दिनों में मसीह और मसीहियत के बारे में झूठी बातें फैलाई जा रही थीं। ''... हर जगह इस मत के विरोध में लोग बातें कहते थे'' (प्रेरितों 28:22)। लूका 1:1-4 से स्पष्ट है कि लूका अपनी पुस्तकों के द्वारा उन गलत धारणाओं को सुधारना चाहता था, उसकी पुस्तकें मसीहियत की वास्तविक तस्वीर दिखाती हैं - विशेषकर किसी रोमी अधिकारी के सामने।[22]

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका इस बात पर ज़ोर देना चाहता है कि मसीही लोग रोमी साम्राज्य को नहीं, बल्कि पाप को हराने की कोशिश कर रहे थे। लूका ने ध्यान दिया कि कुछ रोमी अधिकारी मसीहियों के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं। जो ऐसा नहीं करते वे, रोमी कानून का विरोध कर रहे थे। लूका ने दिखाया कि वास्तव में गड़बड़ी फैलाने वाले लोग

मसीही नहीं, बल्कि यहूदी थे।

इस सम्बन्ध में लूका ने ज़ोर दिया कि मसीहियत पुराने नियम की भविष्यवाणी का पूरा होना था। इसलिए, मसीहियत यहूदी धर्म के लिए अगला कदम था। इस प्रकार मसीहियत रोम की देख-रेख में यहूदी धर्म की तरह वैध धर्म हो जाना चाहिए।[23]

लूका का उद्देश्य शिक्षात्मक था। ''शिक्षात्मक'' शब्द के लिए अंग्रेज़ी का शब्द ''डिडैक्टिक'' यूनानी शब्द डिडेक से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''शिक्षा, सीख, या डॉक्टरिन।'' लूका ने थियुफिलुस को लिखा ताकि वह ''जान ले कि वे बातें (सच्चाई) जिनकी तूने (उसने) *शिक्षा* पाई है, कैसी अटल हैं''। लूका रचित सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक ऐसे दस्तावेज़ हैं जो सच्चाई की शिक्षा देते हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक थियोलोजिकल (धर्मशास्त्रीय) हवालों की पुस्तक नहीं है जिसमें अलग-अलग विषय बड़े क्रमानुसार सूचीबद्ध किए गए हों, परन्तु इसमें अधिकतर डॉक्टरिन ही है। आगे चलकर इस पुस्तक का अध्ययन करने पर इसमें हमें उद्धार, कलीसिया और पवित्र आत्मा के काम आदि विषयों पर दी गई शिक्षा मिलेगी।

समय

'प्रेरितों के काम' की पुस्तक कब लिखी गई? हम उन कुछ उदारवादी विद्वानों की बात को अस्वीकार करते हैं जो इसे ''मान्यताओं के बढ़ने के लिए समय को अधिकार देने के लिए दूसरी शताब्दी का काम बताते हैं।''

हम इसके लिखे जाने की ठीक-ठीक तिथि के बारे में निश्चित नहीं हो सकते, परन्तु मेरे विचार में यह पुस्तक सन 62 के अन्त तक या 63 के आरम्भ में पूरी हो चुकी थी। यह उन दो वर्षों का समय होगा जिसका वर्णन पुस्तक[24] के अन्तिम से पहले पद में किया गया है।

यद्यपि लूका का उद्देश्य पौलुस की जीवनी बताना नहीं था, फिर भी यह मानना कठिन है कि लूका ने पौलुस के बारे में क्यों नहीं बताया कि उसका क्या हुआ। यदि इस पुस्तक के पूरा होने से पहले नीरो के सामने पौलुस की पेशी हो चुकी होती तो लूका उसके बारे में अवश्य लिखता। इसके लिए एक ही पंक्ति पर्याप्त थी।[25]

निम्न तथ्य इस तिथि की पुष्टि करते हैं: लूका ने रोम और रोमियों को अच्छे उद्देश्य के लिए प्रस्तुत किया है। यदि वह रोम के जलने के बाद सन 64 में लिखता तो तस्वीर अलग ही होती और वह नीरो के द्वारा मसीहियों को सताये जाने का भी वर्णन करता। पौलुस ने सोचा नहीं था कि वह इफिसियों के प्राचीनों को फिर से मिल पाएगा (तु. प्रेरितों 20:38)। स्पष्टत: वह उनसे फिर मिला (1 तीमुथियुस 1:3)।[26] यदि पौलुस छूट कर इफिसुस जा चुका होता, तो लूका प्रेरितों 20 का वर्णन अलग ढंग से करता।

स्थान

लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक सम्भवत: एक लम्बे समय में लिखी गई होंगी। हो सकता है कि लूका ने पौलुस के साथ घूमते समय अपने पास एक डायरी रखी हो। लूका

और प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका के यरूशलेम जाने के सम्बन्ध में काफी कुछ लिखा जा सकता था (प्रेरितों 21:17)। यह भी सम्भावना है कि जब पौलुस कैसरिया में दो साल तक बन्दी रहा (प्रेरितों 24:27),[27] तो लूका फलस्तीन में रुक कर सूचनाएं इकट्ठी करता और लिखता रहा हो। दो वर्ष के बाद लूका पौलुस के साथ रोम में गया (प्रेरितों 27:1) और वहां उसके साथ रहा (फिलेमोन 24) यदि यह तिथि सही है तो सम्भवत: पुस्तक का लेखन रोम में ही सम्पन्न हुआ।

कुछ लोग इफिसुस में सीरिया के अन्ताकिया, कैसरिया या फिर किसी और स्थान पर इसके लिखे जाने की बात करते हैं लेकिन पुस्तक की शिक्षा पर इसके लिखे जाने के स्थान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

सारांश

प्रेरितों की पुस्तक पढ़ते हुए हम रोमांचित हो उठते हैं, और हमें कंपकंपी सी आ जाती है। प्रभु के लिए जो कुछ आरम्भिक मसीहियों ने किया, वह हमें रोमांचित कर देता है। हमारा विश्वास है कि मनुष्य ने जो पहले किया है, वही काम वह (परमेश्वर की सहायता से) दोबारा कर सकता है। दूसरी ओर, हो सकता है कि प्रारम्भिक कलीसिया की स्वयं के साथ तुलना करने पर हमें कंपकंपी आ जाए। प्रारम्भिक कलीसिया की तुलना आज की बहुत सी मण्डलियों के साथ करना बिल्कुल वैसे ही हो सकता है जैसे परमाणु तोप की गूंज के सामने एक खिलौना बन्दूक की पट्टाक की आवाज़ हो। पहले मसीहियों ने ''जगत को उल्टा-पुल्टा कर दिया'' (प्रेरितों 17:6) था। हम में से बहुतों ने अभी संसार को ज़रा सा हिलाया भी नहीं है। मुझे आशा है कि हम अपने उन मार्गदर्शकों के जोश में से कुछ लेकर फिर से ''धरती को हिलाने वाले'' लोगों की मण्डली बन जाएंगे।

विज़ुअल-एड नोट्स

मैंने इस पाठ और अगले पाठ के लिए चिह्नों द्वारा समझाने के लिए आरम्भ में सरल विज़ुअल-एड ली (यदि आपके पास प्रोजेक्टर नहीं है, तो बोर्ड पर या किसी चार्ट पेपर पर मुख्य बातें लिख सकते हैं।) मैंने सीखने वालों को मुख्य बातों के साथ और नोट्स के लिए स्थान देने के साथ कागज़ दिए।

मैंने विभिन्न तथ्यों को बोर्ड पर चित्रित किया। उदाहरण के लिए, जब मैंने एक इतिहासकार के रूप में लूका की चयनात्मकता की बात की, तो मैंने बोर्ड पर एक बिन्दु लगा दिया और इसको नाम दिया ''यरूशलेम''। मैंने उस केन्द्र से हर दिशा की ओर कई रेखाएं खींचीं, जो अलग-अलग प्रेरितों और अन्य व्यक्तियों के काम को दिखाती थीं, जो पृथ्वी के विभिन्न भागों में गये। फिर मैंने रेखाओं में से एक को मोटा किया और इसे यह दिखाते हुए ''पतरस का काम'' नाम दिया क्योंकि अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए, लूका ने जान बूझ कर पतरस के काम को चुना।

सारे अध्ययन के लिए, नये नियम के संसार का विशाल मानचित्र दिखाना लाभदायक होगा।

यदि यह सामग्री क्लास में इस्तेमाल की जाती है, तो सीखने वालों के मनों में मुज़्य बातों को बैठाने के लिए ज़्लैश कार्ड सही होंगे। ज़्लैश कार्ड गत्ते या पोस्टर का एक टुकड़ा होता है जिस में एक ओर प्रश्न होता है और दूसरी ओर उत्तर। क्लास को प्रश्न वाला भाग ''ज़्लैश कार्ड'' दिखाया जाता है, और उन्हें उत्तर देने के लिए उत्साहित किया जाता है। फिर क्लास को यह बताने के लिए कि उन्होंने सही उत्तर दिया, दूसरा भाग दिखाया जाता है। क्लास के हर पीरियड के आरज़्भ में यह कार्ड दिखाना बहुत ही अच्छा है। यदि आप ज़्लैश कार्ड का प्रयोग करने का निर्णय लेते हैं, तो आपको हर पाठ में से कुछ तथ्यों का चयन करना होगा जिन पर आप कार्डों में ज़ोर देना चाहते हों। क्लास के सदस्य गत्ते या कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों से अपने लिए स्वयं ऐसे ज़्लैश कार्ड बना सकते हैं।

पादटिप्पणियां

[1]पाठ आरज़्भ करने के लिए व्यक्तिगत उदाहरण का प्रयोग करने के स्थान पर किसी प्रसिद्ध शृंखला के उदाहरण का इस्तेमाल कर सकते हैं, जो कि अधिक प्रचलित हो। [2]शब्दावली में देखें ''प्रेरित''। [3]यूहन्ना का उल्लेख पतरस के सहयात्री के रूप में किया गया है, और हमें बताया गया है कि याकूब मर गया। [4]उदाहरण के लिए, प्रेरितों 1:19 व्याज़्या करता है कि ''*उनकी* भाषा में'' (अर्थात अरामी में) ''हकलदमा'' का अर्थ ''लोहू का खेत'' है। [5]यदि आप निष्कासन की इस प्रक्रिया में दिलचस्पी रखते हैं, तो बहुत सी भूमिकाएं इसे विस्तार देती मिलेंगी। [6]उदाहरणों में लूका 4:35; 9:39; 18:25 शामिल हैं (चिकित्सकीय शब्द यूनानी में मिलते हैं, परन्तु हिन्दी में नहीं)। [7]प्रेरितों 1 अरामी ज़ाषा को ''*उनकी* भाषा'' कहता है (पद 19); कुलुस्सियों 4:10, 11, और 14 में लूका ''खतना किए हुए लोगों'' (अर्थात यहूदियों) से अलग है। फिर, ''लूका'' एक यूनानी नाम है। [8]यह सूचना मार्सियनवाद विरोधी प्रस्तावना और प्रेरितों 11:28 के वैस्टर्न टैक्सट से मिलती है। वैस्टर्न टैक्सट पर नोट्स देखिए। यद्यपि, कुछ विद्वानों का अनुमान है कि लूका का गृह-नगर त्रोआस, फिलिप्पी, या कहीं और था। और,मार्सियनवाद विरोधी प्रस्तावना के अनुसार, वह अविवाहित था, उसके कोई सन्तान नहीं थी, और वह 84 वर्ष की उम्र में मर गया। [9]शब्दावली में देखें ''भविष्यवाणी''। [10]लूका 1:3 में सज़्मान देकर ''हे श्रीमान'' कहा गया, जबकि प्रेरितों 1:1 में यह वाक्यांश शामिल नहीं किया गया। सज़्भवत: इसमें कोई बड़ी बात नहीं। उन दिनों लिखी गई दो अंकों की दूसरी कड़ी में यही नमूना इस्तेमाल किया गया।

[11]अन्य भिन्नताओं में ''परमेश्वर का मित्र'' और ''परमेश्वर को प्रिय'' शामिल हैं। [12]नये नियम के किसी भी अन्य लेखक ने अपने लेखों में इस प्रकार से सज़्बोधन नहीं किया। [13]यूहन्ना 20:30, 31 और 1 यूहन्ना 1:4 उद्देश्य स्पष्ट करते वाक्यों के उदाहरण हैं। [14]दो उदाहरणों के लिए समय और पुरातत्व विज्ञान ने किस प्रकार लूका को सही सिद्ध किया है, इस शृंखला में देखिए प्रेरितों 17:6, 8; 28:7 पर नोट्स। [15]लूका द्वारा प्रयुक्त स्रोतों का ब्यौरा इस कड़ी में बाद में ''लूका द्वारा प्रयोग किए गए सज़्भावित स्रोत'' पर अतिरिक्त लेख में दिया जाएगा। सज़्भव है, परन्तु लगता नहीं कि पौलुस के द्वारा परिवर्तित दासों ने ये बातें सुनी हों। कुछ टीकाकारों का परामर्श है कि जो कोई भी बाइबल को मौखिक प्रेरणा से दी गई मानता है उसके लिए लूका के ये *खोजी* वार्तालाप बेतुके होंगे। [16]आश्चर्य की बात है, कि इस ईश्वरीय ''स्रोत'' का उल्लेख अधिकतर टीकाकारों के द्वारा नहीं किया जाता। [17]कुछ टीकाकार ''आरज़्भ'' पर ज़ोर देते हैं कि यह केवल एक सहायक क्रिया है क्योंकि मौरमन लोगों ने इस विचार कि ''यीशु आरज़्भ में करता रहा और

सिखाता रहा'' का दुरुपयोग किया है। उन्होंने इसका इस्तेमाल यह सिखाने के लिए किया है कि ऊपर उठाए जाने के बाद, यीशु अमेरिका में गया और वहां उसने विशेष प्रकाशन (मौरमन की किताब) दिया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में आगे हम ध्यान देंगे कि यीशु *अपने लोगों के द्वारा* निरन्तर काम करता रहा। मौरमन शिक्षा के दावे झूठे हैं। [18]यीशु की जीवंत उपस्थिति की बात कहने वाला नये नियम का लेखक केवल लूका ही नहीं था। प्रकाशितवाक्य 1-3 में, यूहन्ना ने ध्यान दिया कि यीशु कलीसियाओं के ''बीच में फिरता'' है और हमारे बारे में सब कुछ जानता है (ध्यान दें प्रकाशितवाक्य 1:13, 20; 2:1)। [19]यह परामर्श अवश्य ही पवित्र आत्मा को व्याकुल कर देगा, जो अपने आप को नहीं, बल्कि यीशु को प्रकट करने आया (यूहन्ना 15:26; 16:14)। [20]एक और दिलचस्प अज़्यास प्रेरितों की पुस्तक में मरकुस 16:17,18 के वायदे को पूरा होते देखना है- जिसमें प्रेरितों 28:1-6 में पौलुस को एक सांप द्वारा काटा जाना भी शामिल है।

[21]मसीही विश्वविद्यालयों में मिशन की क्लासों में मिशन के सिद्धांत तथा ढंगों की खोज के लिए- कर्मियों की टीमें भेजना, भौगोलिक केन्द्र स्थापित करना और वहां से विस्तार करने आदि के लिए प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन किया जाता है। [22]यह कहना अतिश्योक्ति होगा कि लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को पौलुस की पेशी के लिए ''एक बचाव पक्ष'' के रूप में लिखा था; लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक में अधिकतर सामग्री उस उद्देश्य के लिए असंगत होगी। दूसरी ओर, यह स्पष्ट है कि लूका ने रोमी सरकार के बारे में कलीसिया के सकारात्मक विचार को जानबूझ कर प्रस्तुत किया। [23]रोमी साम्राज्य में वैध और अवैध धर्म थे। वैध धर्मों को रोम द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाती थी। यहूदी धर्म एक वैध धर्म था। अन्ततः मसीहियत ने अवैध धर्म घोषित हो जाना था और इसलिए रोमी सरकार द्वारा इस पर अत्याचार होना था। [24]दूसरी शताब्दी के पिछले भाग में, इरेनियुस ने लिखा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक पतरस और पौलुस की मृत्यु के बाद लिखी गई, परन्तु अधिकतर विद्वानों का मत है कि यहां वह गलत था। [25]लूका ने याकूब की मृत्यु को यूनानी में केवल आठ शब्दों में दर्ज किया (प्रेरितों 12:2)। [28]बहुत से विद्वानों का मत है कि पौलुस रोम में कैद से छूट गया था (ध्यान दें फिलेमोन 22) और उसने शिक्षा देने के लिए अतिरिक्त यात्राएं कीं - और उन यात्राओं में से एक इफिसुस के लिए थी, जहां वह तीमुथियुस को छोड़ गया (1 तीमुथियुस 1:3)। पहला तीमुथियुस सम्भवतः पौलुस की गिरफ़्तारी और मारे जाने से पहले उसके कुछ देर के लिए स्वतन्त्र होने के समय लिखी गई (2 तीमुथियुस 4:6-8)। [27]जब पौलुस इलाके में आया तो लूका उसके साथ था (प्रेरितों 21:17), वहां से जाते समय भी लूका उसके साथ ही था (प्रेरितों 27:1)।